शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

ग्रामीण समाज में नरवा, गरूवा, घुरूवा और बाड़ी की उपयोगिता एवं महत्व का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले के संदर्भ में)

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

एस कुमार
शोध छात्र,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर,
स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
ईमेलःeshkumarsaho@gmail.com

सपना शर्मा सारस्वत
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर,
स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सारांश

भारत गांवों का देश है क्योंकि आज भी हमारे देश की कुल जनसंख्या का लगभग 68.84 प्रतिशत, 83.3 करोड़ से अधिक भाग ग्रामीण समाज में ही निवास करता है भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। ''कृषि के भूमण्डलीकरण का एक अन्य तथा अधिक प्रचलित पक्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों का इस क्षेत्र में कृषि मदो जैसे बीज, कीटनाशक, तथा खाद के विक्रेता के रूप में प्रवेश है। इससे किसानो की महंगी खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता बढ़ी है, जिससे उनका लाभ कम हुआ है, बहुत से किसान ऋणी हो गए है, तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे पर्यावरण संकट भी पैदा हुआ है।'' पहले कृषि परम्परागत यंत्रो से की जाती थी, जिसमें समय तो अधिक लगता था किन्तु किसी प्रकार का पर्यावरणीय अथवा पारिस्थितिकी समस्या उत्पन्न नहीं होती थी। किन्तु अच्छे उत्पादन हेतु कृषि में व्यापक स्तर पर मशीनीकरण हुआ। जिन क्षेत्रो में कृषि में मशीनीकरण हुआ है उन क्षेत्रो में पशुपालन का स्वरूप बदल गया है। फलतः कृषि में परम्परागत खाद का भी प्रयोग कम होने लगा है। कृषको का आधुनिक खेती के प्रति आकर्षण ने परम्परागत कृषि तकनिको तथा विधियों को लुप्ती के कागार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

प्रस्तावना

''भारत गांवों का देश है क्योंकि आज भी हमारे देश की कुल जनसंख्या का लगभग 68.84 प्रतिशत, 83.3 करोड़ से अधिक भाग ग्रामीण समाज में ही निवास करता है भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है ।[1] ''कृषि के भूमण्डलीकरण का एक अन्य तथा अधिक प्रचलित पक्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों का इस क्षेत्र में कृषि मदो जैसे बीज, कीटनाशक, तथा खाद के विक्रेता के रूप में प्रवेश है। इससे किसानो की महंगी खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता बढ़ी है, जिससे उनका लाभ कम हुआ है, बहुत से किसान ऋणी हो गए है, तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे पर्यावरण संकट भी पैदा हुआ है।'' [2] पहले कृषि परम्परागत यंत्रो से की जाती थी, जिसमें समय तो अधिक लगता था किन्तु किसी प्रकार का पर्यावरणीय अथवा पारिस्थितिकी समस्या उत्पन्न नहीं होती थी। किन्तु अच्छे उत्पादन हेतु कृषि में व्यापक स्तर पर मशीनीकरण हुआ। जिन क्षेत्रो में कृषि में

मशीनीकरण हुआ है उन क्षेत्रों में पशुपालन का स्वरूप बदल गया है। फलतः कृषि में परम्परागत खाद का भी प्रयोग कम होने लगा है।[3] कृषकों का आधुनिक खेती के प्रति आकर्षण ने परम्परागत कृषि तकनिकों तथा विधियों को लुप्ती के कागार पर लाकर खड़ा कर दिया है।[4]

मौजूदा समय में जरूरत है रासायनिक खेती के बेहतर विकल्प तलाशने की और वह जैविक खेती के रूप में सामने आ रहा है। अर्थात फिर से प्राकृतिक तरीके से खाद तैयार कर खेती करना।[5] छत्तीसगढ़ के वर्तमान मुख्यमंत्री भूपेस बघेल ने कहा है कि ''गांवों में स्वयं के संसाधनों से समृद्ध बनने की क्षमता है, जरूरत है समुचित संयोजन एवं समन्वय की ''छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी नरवा, गरूवा, घुरूवा, अउ बाड़ी, गॉव ला बचाना हे संगवारी'' यह बात कहते समय मेरे मन में छत्तीसगढ़ के पूरे ग्रामीण परिदृश्य की तस्वीर उभर जाती है। जहॉ नालों में बहता पानी है, जहॉ पशुधन की बहुतायत है, जहॉ गोबर तथा अन्य ग्रामीण कचरे के प्रसंस्करण से बड़े पैमाने पर जैविक खाद के उत्पादन की अपार संभावनाऍ है, और जहॉ हर किसान के घर अपने उपयोग के लिए लगाई जाने वाली बाड़ी हैं, जिसमें वह सब्जी, फल–फूल का उत्पादन करता है और इस तरह वह अपने पोषण तथा आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करता है।'' [6]

शोध विषय का उद्देश्य

1. ग्रामीण समाज में नरवा, गरूवा, घुरूवा व बाड़ी की उपयोगिता एवं महत्व का अध्ययन करना।
2. नरवा, गरूवा, घुरूवा और बाड़ी योजना के प्रति ग्रामीणों के ज्ञान, दृष्टिकोण तथा व्यवहार का विश्लेषण करना है ।

शोध क्षेत्र एवं प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगॉंव जिले के विकासखण्ड क्रमशः खैरागढ़, छुईखदान एवं राजनांदगॉव के 10–10 ऐसे ग्राम पंचायतों का चयन किया गया है जहॉं सुराजीगांव योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है । आदर्श संख्या प्रति ग्राम–पंचायत 15 मानते हुए कुल 450 सूचनादाताओं का चयन सुविधामूलक उद्‌देश्यपूर्ण निदर्शन प्रक्रिया द्वारा संपादित किया गया है यह ध्यान रखा गया है कि सुराजी गांव योजना से जुड़े ग्रामवासियों का ही प्रतिनिधित्व हो। इसके लिए प्रत्येक ग्राम से ग्राम गौठान विकास समिति तथा महिलास्वयं सहायता समूह के सदस्य जो गौठान में कार्यरत है को उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया है।

शोध विषय पर आंकड़े एकत्रित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय समंको का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंको को एकत्र करने के लिए शोधकर्ता द्वारा साक्षात्कार अनुसूचि तैयार करके किया गया है। द्वितीयक समंको का संकलन प्रकाशित अप्रकाशित अभिलेखो के माध्यम से किया गया है। एकत्रित ऑकड़ों का वर्गीकरण, सरणीयन, प्रतिशत आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करके निर्वचन किया गया है।

शोध परिणाम एवं व्याख्या

राजनांदगांव जिले के विकासखण्ड खैरागढ़, छुईखदान तथा राजनांदगांव से चयनित उत्तरदाताओं में से प्राप्त जानकारी कोआधार बनाकर प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण समाज में नरवा, गरूवा, घुरूवा और बाड़ी के सामाजिक महत्व को निम्नवर्णित तालिका में स्पष्ट किया गया है –

तालिका क्रमांक 1

क्रमांक	कथन	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	नरवा की उपलब्धता	हॉ	420	93.3
		नहीं	30	6.7
2	वर्ष भर जल भराव की संभावना	हॉ	306	68
		नहीं	144	32
3	उत्तरदाताओं के घर गोवंशीय पशुएँ	हॉ	369	82
		नहीं	81	18
4	गोवंशीय पशुओं से दूध की प्राप्ति	हॉ	288	78.04
		नहीं	81	21.95
5	कृषि एवं परिवाहन संबंधी कार्य में पशु शक्ति(बैल/भैस) का उपयोग	हॉ	158	35.10
		नहीं	292	64.90
6	गोबर खाद के उपयोग से मृदा के स्थायी उर्वरता में वृद्धि होने की जानकारी	हॉ	423	94.60
		नहीं	27	6.40

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है सर्वाधिक 93.3 प्रतिश उत्तरदाताओं के गॉव में नरवा की उपलब्धता है तथा 6.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के गॉव में नहीं है। 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि नरवा में वर्षभर जल प्रबंधन की संभावना है। सर्वाधिक 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर गोवंशीय पशुएँ है, 78.04 प्रतिशत उत्तरदाताओं को गोवंशीय पशुओं से दूध की प्राप्ति होती है। 35.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर कृषि एवं परिवहन संबंधी कार्य में पशु शक्ति का उपयोग करते है। सर्वाधिक 94.6 प्रतिशत उत्तदाता को जानकारी है कि गोबर खाद के प्रयोग से मृदा के स्थाई उर्वरता में वृद्धि होती है।

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश ग्रामों में नरवा उपलब्ध है। नरवा विकास कार्य कर सिंचाई की सुविधा को बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन का प्रमुख स्थान है तथा ग्रामीण समाज के लिए बहुउपयोगी है। अधिकांश उत्त्तरदाताओं को पता है गोबरखाद के प्रयोग से मृदा की स्थायी उर्वरता में वृद्धि होती है जो जैविक खाद के महत्व के प्रति ग्रामीणों की जागरूकता को प्रदर्शित करता है।

तालिका क्रमांक 2

उत्तरदाताओं के घर घुरूवा एवं होने की स्थिति में घुरूवा का स्वरूप

क्रमांक	घर में घुरूवा होना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	384	85.3
2	नहीं	66	14.7
योग		450	100
यदि हॉ तो स्वरूप			
1	पारंपरिक स्वरूप (गड्ढ़े)	357	92.96

2	आधुनिकतम (नाडेप/वर्मीकम्पोस्ट)	22	5.72
3	दोनो	5	1.30
योग		384	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 85.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर घुरूवा है तथा 14.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर घुरूवा नहीं है।

जिन उत्तरदाताओं के घर घुरूवा है उनसे यह जानने का प्रयास किया गया है घरूवा का स्वरूप क्या है जिनसे यह तथ्य प्राप्त हुआ 92.96 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर पारंपरिक घुरूवा है। 5.72 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर आधुनिकतम घुरूवा(नाडेप/वर्मीकम्पोष्ट) है तथा 1.30 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर दोनो तरह के घुरूवा है।

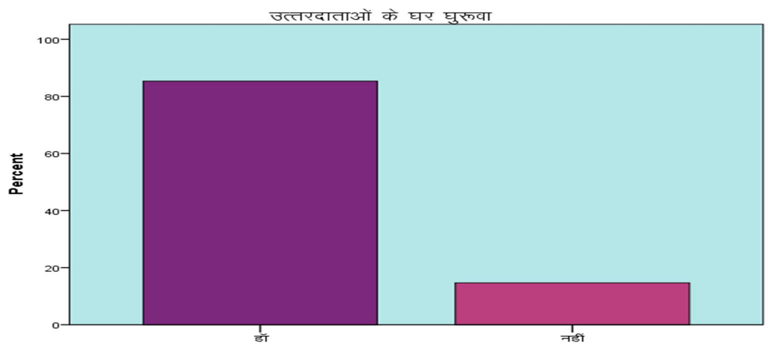

तालिका क्रमांक–2 का चित्रमय प्रस्तुति

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश ग्रामीणों के घर पारंपरिक गड्ढ़े वाला घुरूवा है जो लोगो में जागरूकता के अभाव को दर्शाता है। अधिक गुणवत्तापूर्ण खाद निर्माण के लिए आधुनिकतम तकनीकों के प्रयोग बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है।

तालिका क्रमांक 3

उत्तरदाताओं के घर बाड़ी एवं होने की स्थिति में उत्पाद का उपयोग

क्रमांक	उत्तरदाताओं के घर बाड़ी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	219	48.7
2	नहीं	231	51.3
3	योग	450	100
यदि हॉ तो बाड़ी से उत्पादित साग–सब्जी, फल–फूल का उपयोग			
1	केवल पारिवारिक उपयोग के लिए	152	69.40
2	पारिवारिक एवं बाजार दोनो के लिए	67	30.59
योग		219	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 48.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर बाड़ी है जिसमें सब्जी तथा मौसमी फल, फूल होते है, तथा 51.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर बाड़ी नहीं है।

जिन उत्तरदाताओं के घर बाड़ी है उनसे यह जानने का प्रयास किया गया है कि बाड़ी से उत्पादित साग–सब्जी (उत्पाद), का उपयोग कैसे करते हैं जिनसे यह तथ्य प्राप्त हुआ 69.40 प्रतिशत उत्तरदाता केवल पारिवारिक उपयोग में लाते हैं तथा 30.59 प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक एवं बाजार अर्थात बेचने के लिए भीउपयोग करते हैं।

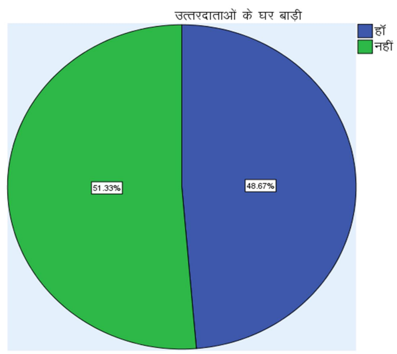

तालिका क्रमांक–3 का चित्रमय प्रदर्शन

प्राप्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि गांवों में घरो में बाड़ी है, जहां से लोग घर की साग–सब्जी की जरूरतें खुद ही पूरी कर लेते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा बाड़ी से होने वाले उत्पाद को केवल पारिवारिक उपयोग में लाते है, बाड़ी में घुरूवा खाद के प्रयोग कर ताजी एवं कैमिकल व रसायन मुक्त साग–सब्जी प्राप्त किया जाता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नरवा, गरूवा घुरूवा व बाड़ी ग्रामीण समाज में पाए जाने वाले बहुत ही महत्वपूर्ण पारंपरिक एवं प्राकृतिक संसाधन है। इन संसाधनों के विकास एवं समुचित प्रयोग करने से कृषि लागत में कमी आएगी तथा कृषि को लाभकारी बनाया जा सकता है। इससे गांवों के पर्यावरण एवं खेतो की उत्पादकता में सुधार आएगा तथा ग्रामीण संस्कृति एवं परंपरा को बढ़ावा मिलेगा। पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान रखती है, तथा कृषि में गोबर खाद को बढ़ावा देने से न केवल मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाया जा सकता है बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी इसके अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।नगरीय क्षेत्रों में आज किचन गार्डन की चर्चाएं हो रही हैं लोग घर की छत पर जैविक पद्धति से सब्जियां उगाए इससे उन्हे सब्जियां न केवल ताजी मिलेगी, बल्कि रसायनों से मुक्त भी। परन्तु छत्तीसगढ़ के गांवों में अधिकांश घरों में एक किचन गार्डन होता है जिसे बाड़ी कहते है जिसमें वह सब्जी, फल–फूल का उत्पादन करता है और इस तरह वह अपने पोषण तथा आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करता है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल अमित भारत में ग्रामीण समाज (2013) विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली पृ0 .91 – 92
2. ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन(2015–16) NCERT पृ0 70/71
3. पाठक गणेश कुमार, श्रीवास्तव दिलीप कुमार, मनोहर मुरली प्रतिभा प्रकाशन बालिया योजना नवम्बर 1994 (https://hindi.indiawaterportal.org/node/53289)
4. ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन (2015–16) NCERTपृ0 65
5. सिंह एस. के. खेती की पारंपरिक पद्धति की प्रासंगिकता सर्वोदय प्रेस सर्विस अक्टूबर 2012
6. सुराजी गॉव प्रकोष्ठ कृषि विभाग (2019)सुराजी गॉव योजना मार्गदर्शिका छत्तीसगढ़ शासन पृ0. 3
7. तिवारी अरूण कीटनाशक–प्रोत्साहन बेहतर या नियमन (2018)INDIAहिन्दी waterportal पृ0 3 (https://hindi.indiawaterportal.org/Toxic-pesticides-ban-in-Punjab)